Page I

The details of the materials are given below for the UG students
BA (Part I) Psychology (H)
Date - 11-5-2020 Paper I

Name of the Topics — Meaning and nature of perceptions (प्रत्यक्षीकरण की परिभाषा एवं विशेषता — प्रत्यक्षीकरण व्यक्ति के मानसिक ज्ञान की प्रक्रिया को कहते हैं जिसका सम्बन्ध उन वस्तुओं, व्यक्तियों अथवा परिस्थितियों के ज्ञान से रहता है जो वर्तमान समय में व्यक्ति के सम्मुख उपस्थित रहता है)
मानसिक ज्ञानात्मक प्रक्रिया की प्रारंभिक अवस्था को संवेदना

प्रत्यक्षीकरण की विशेषता (Nature of Perception)

(1.) प्रत्यक्षीकरण एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है:- प्रत्यक्षीकरण का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि इसके अन्तर्गत कई उप प्रक्रियाएँ होती पायी जाती है जैसे ग्राहक प्रक्रिया (Receptor process) प्रतीकात्मक प्रतिक्रिया (Symbolic process) भावात्मक प्रक्रिया (affective process) एवं संगठनात्मक प्रक्रिया (organisational process) ग्राहक प्रक्रिया में ग्राहक तंत्र कार्यशील होता है जिसका प्रभाव मस्तिष्क के संवेदी क्षेत्र या ज्ञानवेदी क्षेत्र में पड़ता है संवेदी क्षेत्र के अतिरिक्त मस्तिष्क के साहचर्य क्षेत्र पर भी वातावरण में उपस्थित उत्तेजना का प्रभाव पड़ता है जिसके फलस्वरूप अन्य प्रक्रियाएं यथा प्रतीकात्मक, वास्तव भावात्मक एवं संगठनात्मक प्रक्रियाएँ होती है तब प्रत्यक्षीकरण होता है।

(2.) प्रत्यक्षीकरण से उपस्थित उत्तेजनाओं का तात्कालिक ज्ञान होता है- प्रत्यक्षीकरण स्वयं ~~एक~~ अपने आप ~~@~~ में ज्ञान या अनुभव नहीं होता है बल्कि वह एक ज्ञान प्राप्त करने वाली मानसिक जटिल मानसिक प्रक्रिया है इस मानसिक क्रिया द्वारा व्यक्ति अपने वातावरण में उपस्थित होने वाले विभिन्न उत्तेजनाओं के संबंध में तात्कालिक ज्ञान प्राप्त करता है।

ज्ञान प्राप्त करने के बाद व्यक्ति ही सकते है जैसे किसी वस्तु की अनुपस्थिति में हम ज्ञान प्राप्त करते हैं तो उसे स्मृति कहा जाता है

(3.) प्रत्यक्षीकरण एक सक्रिय मानसिक प्रक्रिया है - संवेदना की तरह प्रत्यक्षीकरण मात्र वह दर्पण नहीं है जिसके द्वारा हम वातावरण में उपस्थित वस्तु या व्यक्ति का केवल आभास या परिचय मिलता है इसमें कुछ अन्य क्रियाएँ भी होती है जिसके फलस्वरूप उस व्यक्ति या वस्तु से प्राप्त संवेदी संकेतों और उनके सम्बद्ध पूर्व अनुभवों को संगठित किया जाता है इस संगठन के परिणाम स्वरूप ही उत्तेजना के निश्चित और सार्थक स्वरूप का अनुभव होता है किसी उत्तेजना के इस अनुभव में उत्तेजना क्षेत्र का हु-ब-हू प्रतिबिम्ब नहीं होता, बल्कि प्रत्यक्षीकरण से वस्तु उसके विभिन्न अंगों के पारस्परिक संबंधों, वस्तु में विद्यमान केन्द्रीय या महत्वपूर्ण विशेषताएँ आदि शामिल रहती है इन्ही विशेषताओं के कारण दो वस्तुओं के प्रत्यक्षीकरण में अंतर होता है उदाहरण के लिए, जब हम किसी पेड़ को देखते है तब इसके विभिन्न अंगों जैसे - पत्तियाँ

ध्वनियों, पेड़ आदि के पारस्परिक संबंधों तथा इसके आकार-संबंधी केन्द्रीय विशेषताओं के आधार पर इनका प्रत्यक्षीकरण पौधों से भिन्न पेड़ के रूप में होता है।

(4) प्रत्यक्षीकरण चयन की एक सक्रीय प्रक्रिया है। Perception is an active process of choice. व्यक्ति के सम्मुख वातावरण में एक ही साथ कई उत्तेजनाएँ उपस्थित होती है लेकिन सभी उत्तेजनाओं का प्रत्यक्षीकरण संभव नहीं है। व्यक्ति केवल उन्हीं वस्तुओं का प्रत्यक्षीकरण करता है जो उसकी अवधान परिधि में आती है। अन्य वस्तुएँ व्यक्ति के अवधान परिधि के बाहर रहती है, इसलिए उनका प्रत्यक्षीकरण संभव नहीं होता। यहाँ प्रश्न उठता है कि कौन सी वस्तु अवधान परिधि अथवा अवधान केन्द्र तथा कौन अवधान परिधि से बाहर रहती है। उन वस्तुओं या उत्तेजना विशेष की कुछ विशेषताएँ, जैसे तीव्रता (Intensity), नवीनता (Novelty) पुनरावृत्ति (repetition) आदि एवं प्राणी की व्यक्तिगत विशेषताएँ — जैसे प्रेरणाएँ, इच्छाएँ, आवश्यकताएँ आदि पर निर्भर करता है। प्राणी का व्यक्तिगत विशेषताओं का वातावरण में उपस्थित वस्तुओं के चयन करने में महत्वपूर्ण स्थान होता है। व्यक्ति अपने

Page No.:
Date:
YOUVA

प्रत्यक्ष इच्छा या आवश्यकतानुसार वातावरण में उपस्थित वस्तुओं का चयन करता है [illegible] है इसी विशेषता के कारण प्रत्यक्षीकरण को चयनात्मक मानसिक प्रक्रिया कहते हैं।

(5) प्रत्यक्षीकरण के ग्राहक एवं स्नायु संबंधी जटिल क्रियाएँ अन्तर्निहित रहती हैं- प्रत्यक्षीकरण में उत्तेजना का उपस्थित होना अनिवार्य है। वातावरण में उपस्थित उत्तेजनाएँ हमारी ज्ञानेन्द्रियों के सम्पर्क में आती हैं जिसके परिणाम स्वरूप ग्राहक तंत्र कार्यशील होता है। इन तंत्र के कार्यशील होने के फलस्वरूप स्नायुप्रवाह बनते हैं जो ज्ञानवाही तंतुओं द्वारा मस्तिष्क के संवेदी क्षेत्र में पहुँचते हैं और इस प्रकार उपस्थित उत्तेजना की संवेदना होती है इसके बाद मस्तिष्क में उत्तेजना से संबंधित पूर्व अनुभवों के संकेत जागृत होते हैं। मस्तिष्क के साहचर्य क्षेत्र उपस्थित उत्तेजना के प्राप्त संवेदी विवरणों एवं पूर्व अनुभवों के संचित संकेतों को संगठित कर निश्चित अर्थ प्रदान करते हैं जिससे उत्तेजना वास्तविक रूप में परिणत हो जाती है जिसे प्रत्यक्षीकरण कहते हैं।

Page No.: Date: YOUVA

(6) प्रत्यक्षीकरण उत्तेजना का संगठन है:— (Perception is an organisation of stimulus:)— वातावरण की जिन उत्तेजनाओं का हमें प्रत्यक्षीकरण होता है, वे सब विशेष प्रकार से व्यवस्थित एवं संगठित रहती हैं। जैसे जब हम किसी वस्तु या व्यक्ति का प्रत्यक्षीकरण करते हैं तब उस वस्तु या व्यक्ति के विभिन्न अवयवों की विशेषताओं का अलग-अलग प्रत्यक्षीकरण न करके उस वस्तु या व्यक्ति का प्रत्यक्षीकरण सम्पूर्ण रूप से एक संगठित इकाई के रूप में करते हैं। अतः प्रत्यक्षीकरण उत्तेजना का संगठन है।

(7) प्रत्यक्षीकरण में स्थिरता (Consistency) के लक्षण पाए जाते हैं। — उत्तेजना के परिस्थिति में परिवर्तन होने पर यह देखा जाता है कि उसका प्रत्यक्षीकरण प्रायः अपरिवर्तित रहता है उदाहरण के लिए जैसे किसी टेबुल को निकट से देखते हैं तो टेबुल किनारों का प्रतिबिंब रेटिना पर पड़ता है और वही आयताकार मालूम होता है और वही टेबुल कुछ दूरी से देखा जाता है तो तब उसके आगे के दोनों किनारे का ही प्रतिबिंब बनता है यह प्रतिबिंब एक नाप देखा जाती होती है लेकिन उसका प्रत्यक्षीकरण